 ISSN 2581 9917

शकुन्तला देवी का जीवनसंघर्ष

शीतल कुमारी
पीएच.डी. (हिन्दी), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

हरियाणा की भूमि वीरों की भूमि रही है, यह किसानों और जवानों की भूमि रही है। परन्तु यह भी सच है कि यहाँ की खाप-संस्कृति की पितृसत्तात्मक जलवायु आधी आबादी को उगने और फलने-फूलने में बाधक रही है। यही कारण है कि आज भी यहाँ सरकारी स्तर पर 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के द्वारा सामाजिक जागरुकता के माध्यम से लिंगानुपात ठीक करने का प्रयास हो रहा है। ऐसे में रेवाड़ी जनपद के मनेठी ग्राम निवासी स्व. श्रीमान् मामन सिंह और उनकी धर्मपत्नी शकुन्तला देवी ने अपने भागीरथ प्रयासों से पितृसत्तात्मक समाज की पाषाण भूमि में स्त्री-सशक्तिकरण की गंगा को प्रवहमान किया है। स्व. श्रीमान् मामन सिंह की छः बेटियां हैं, एक भी बेटा नहीं है। इसके लिए न तो स्वर्गीय मामन सिंह दुःखी रहे और न इसकी चिन्ता उनकी पत्नी शकुन्तला देवी को है। बल्कि आरम्भ से ही मामन सिंह की इच्छा थी कि उनकी बेटियाँ पढ़-लिखकर स्वावलम्बी बने और समाज को एक नयी दिशा देने का कार्य करें। परन्तु दुर्भाग्यवश हृदयगति के अचानक रुक जाने से मामन सिंह का असमय स्वर्गवास हो गया। अब उनकी छः बेटियों के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का पूरा उत्तरदायित्व पत्नी शकुन्तला देवी के कन्धों पर आन पड़ा। शकुन्तला देवी ने अपने पति की इच्छाओं को जीवन्त रखते हुए अपनी सभी बेटियों को न सिर्फ शिक्षित बनाया है, अपितु उन्हें स्वावलम्बी और समर्थ बनाकर समाज एवं देश के समक्ष एक मिशाल भी प्रस्तुत किया है।

गौरतलब है कि शकुन्तला देवी के पति हरियाणा सरकार के पशु-पालन विभाग में कार्यरत थे। वर्ष 2003 में हृदयाघात से उनका निधन हो गया। उनके निधन के उपरान्त पत्नी शकुन्तला देवी को कुछ ही हजार रुपये पेंशन मिलती थी। लेकिन वे बेटियों को ही अपना सहारा मानकर उन्हें हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रहीं। 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद' की सूक्ति को चरितार्थ करते हुए उन्होंने अपनी सभी छः बेटियों को पोस्ट ग्रेजुएट तक की शिक्षा दिलाई और इनमें से दो बेटियाँ डाक्टरेट भी हुईं। शकुन्तला देवी की छः बेटियों में मीना पशुपालन विभाग में लिपिक हैं। डॉ. पुष्पा गवर्नमेंट स्कूल, रान्ताकला, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) में मनोविज्ञान की लेक्चरार हैं। डॉ. सुशील कुमारी देश के नामचीन दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध मैत्रेयी महाविद्यालय में संस्कृत की शिक्षिका हैं। रिंकू कुमारी ने एम.ए. (संस्कृत) और बी.एड. किया हुआ है। ज्योति ने एम.ए. (हिन्दी) और बी.एड. किया है। सबसे छोटी अन्तिमा ने बी.ए. और जेबीटी कर लिया है और वह पुलिस विभाग में जाकर देश व समाज की सेवा करना चाहती है। आज शकुन्तला देवी की आँखें अपने पति को याद कर नम हो जाती हैं और वे कहती हैं कि उनके पति जीवित होते तो वे भी बेटियों की उपलब्धियों पर खुश होते। उनका साफ मानना है कि कभी भी बेटियों को बेटों से कमतर न समझें।

शकुन्तला देवी ने जिन कष्टों को सहा है, उनके समक्ष बड़े-बड़ों का धैर्य जवाब दे जाए। वे जीवन के कठोर संघर्षों का सामना कर आगे बढ़ीं, इसलिए हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है कि 'माता गुरुतरा भूमेः' अर्थात् माँ पृथिवी से भी महान् होती है। कहते हैं 'सब दिन होय न एक समाना', समय बदला और बेटियों ने भी अपनी मां के सपनों को पूरा कर उच्च शिक्षा के बाद सरकारी नौकरियां भी हासिल की। हरियाणा सरकार ने उनके कठिन संघर्ष से प्रभावित होकर उन्हें 'सर्वश्रेष्ठ मां' के सम्मान से विभूषित किया है।

एक मां के रूप में अपने संघर्षों और बेटियों के प्रति अपने दृष्टिकोण से शकुन्तला देवी ने न केवल हरियाणा को अपितु पूरे भारतवर्ष को प्रेरित किया है। वे सच में 'सर्वश्रेष्ठ माँ' सम्मान की वास्तविक हकदार हैं, एक ऐसी माँ जिसे सम्मानित कर सम्मान भी स्वंय को सम्मानित महसूस करे।